Sample

लाल–किताब कुण्डली

Computer Zone

Contact -

।। नवग्रह स्तोत्रम् ।।

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्त्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।।

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ।।
नरनारीनृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषा मारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।।

ज्योतिष सारिणी

जन्म दिन	16 January 1976 (Friday)		
जन्म समय	11:25:08AM		
जन्म स्थान	Patna (bihar) , INDIA		
रेखांश	085:07:00E	सांपातिक काल	19:14:51 hrs
अक्षांश	025:36:00N	सूर्योदय	06:40:19AM
समयक्षेत्र	-05:30:00 hrs	सूर्यास्त	05:17:54PM
समय संशोधन	00:00:00 hrs	अयनांश	N.C.Lahiri (023:31:21)
जी.एम.टी. समय	05:55:08 hrs	विक्रम संवत्–	**2032**
स्थानीय समय संस्कार	00:10:28 hrs	शक संवत्–	**1897**
स्थानीय समय	11:35:36 hrs	संवत्सर–	राक्षस
		संवत्सर अधिपति–	इन्द्राग्नि

अवकहड़ा चक्र

लग्न :	मेष	तत्वाधिपति :	शुक्र
लग्नाधिपति :	मंगल	नाड़ी पद :	आदि
राशि (चन्द्रमा) :	मिथुन	नाड़ी :	आदि
राशिपति :	बुध	विहग :	पिंगला
नक्षत्र :	आर्द्रा	वेध :	श्रवण
नक्षत्रपति :	राहु	आद्याक्षर :	वा
नक्षत्र चरण :	4		
पाया :	ताम्र		
ऋतु :	शिशिर		
मास :	पौष		
पक्ष :	शुक्ल		
तिथि :	चतुर्दशी		
तिथि श्रेणी :	रिक्ता		
तिथि पति :	शुक्र		
करण :	वणिज		
करण श्रेणी :	चर		
करणपति :	मणिभद्र		
गण :	मनुष्य		
वर्ण :	शूद्र		
योनि :	श्वान (स्त्री)		
सूर्य सिद्धान्त योग :	वैधृति		
रज्जु :	कंठ		
वश्य :	द्विपद		
तत्व :	जल		

घात चक्र

राशि (सूर्य) :	कुम्भ
मास :	अशाढ़
तिथि :	2,7,12
वार :	सोमवार
नक्षत्र :	स्वाति
प्रहर :	3
लग्न :	कर्क
सूर्य सिद्धान्त योग :	परिघ
करण :	कौलव

जन्म–दिन का ग्रह– शुक्र

जन्म–समय का ग्रह– मंगल

Sample DOB: 16:01:1976 ; TOB: 11:25:08AM ; POB: Patna (bihar) (INDIA)

लाल किताब लग्न कुण्डली

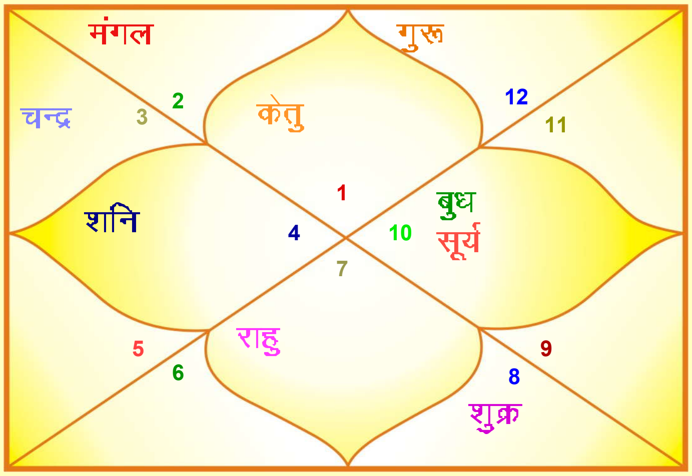

चन्द्र कुण्डली (लाल किताब)

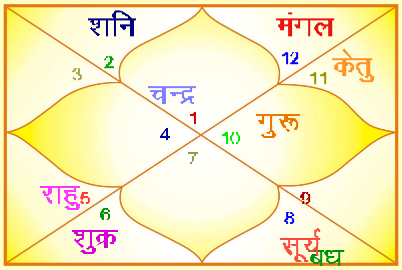

भाव चलित कुण्डली

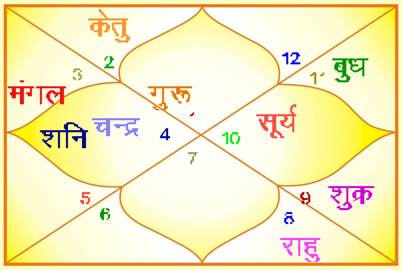

लाल किताब कुण्डली में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भा० का ग्रह	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	दशम	5	राशि						हाँ	अशुभ भाव में
चन्द्र	तृतीय	4	राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव में
मंगल	द्वितीय	1, 8	राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव में
बुध	दशम	3, 6	ग्रह						हाँ	अशुभ भाव में
गुरू	द्वादश	9, 12	ग्रह						हाँ	शुभ भाव में
शुक्र	अष्टम	2, 7	राशि				हाँ			
शनि	चतुर्थ	10, 11	राशि							अशुभ भाव में
राहु	सप्तम		राशि						हाँ	अशुभ भाव में
केतु	लग्न		राशि				हाँ			

लाल किताब कुण्डली में भावों (खानों) की स्थिति

खाना नं॰	खाना नं॰	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने
१	केतु	मंगल	सूर्य		सूर्य	शनि	मंगल
२	मंगल	शुक्र	बृहस्पति		चन्द्रमा		चन्द्रमा
३	चन्द्रमा	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
४	शनि	चन्द्रमा	चन्द्रमा		बृहस्पति	मंगल	चन्द्रमा
५		सूर्य	बृहस्पति	हाँ			सूर्य
६		बुध	बुध केतु		बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७	राहु	शुक्र	शुक्र बुध		शनि		शुक्र
८	शुक्र	मंगल	मंगल शनि			चन्द्रमा	चन्द्रमा
९		बृहस्पति	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
१०	सूर्य, बुध	शनि	शनि		मंगल	बृहस्पति	शनि
११		शनि	शनि				बृहस्पति
१२	बृहस्पति	बृहस्पति	बृहस्पति		शुक्र केतु	बुध राहु	राहु

लाल किताब वर्षफल

वर्षफल कुण्डली –39

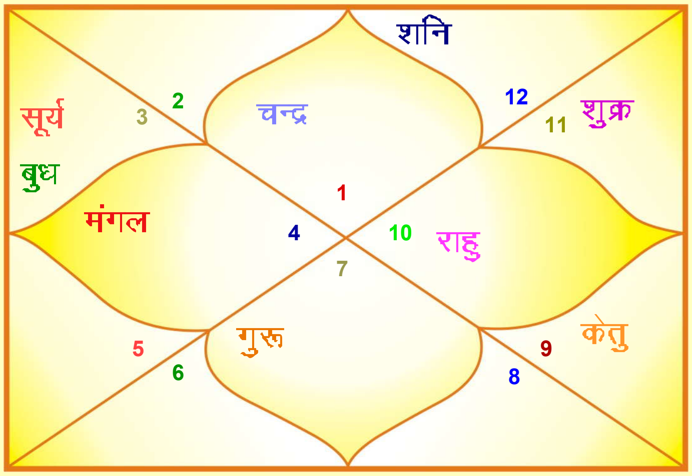

16:01:2014 -- 15:01:2015

लग्न कुण्डली (टेवा)

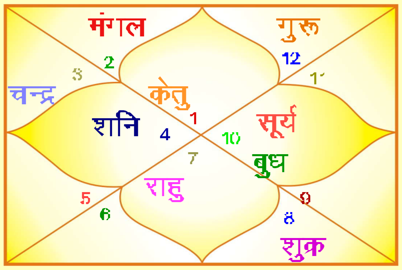

लाल किताब चंद्र कुण्डली

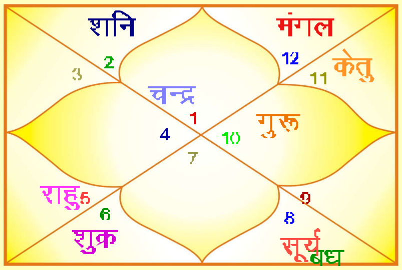

लाल किताब से वर्षफल में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	प्रभाव	पक्का घर	भाग्योदय का ग्रह	साथी ग्रह	कायम ग्रह	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य (बद)	तृतीय	राशि				हाँ			शुभ भाव में
चन्द्र	लग्न	राशि				हाँ			शुभ भाव में
मंगल (बद)	चतुर्थ	ग्रह							अशुभ भाव में
बुध (बद)	तृतीय	ग्रह		हाँ					अशुभ भाव में
गुरू	सप्तम	राशि						हाँ	अशुभ भाव में
शुक्र (बद)	एकादश	राशि						हाँ	
शनि (बद)	द्वादश	ग्रह				हाँ		हाँ	शुभ भाव में
राहु	दशम्	ग्रह						हाँ	अशुभ भाव में
केतु (बद)	नवम्	ग्रह				हाँ		हाँ	शुभ भाव में

लाल किताब से वर्षफल में भावों (खानों) की स्थिति

खाना न॰	खाना न॰	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने
१	चन्द्रमा	मंगल	सूर्य		सूर्य	शनि	मंगल
२		शुक्र	बृहस्पति	हाँ	चन्द्रमा		चन्द्रमा
३	सूर्य, बुध	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
४	मंगल	चन्द्रमा	चन्द्रमा		बृहस्पति	मंगल	चन्द्रमा
५		सूर्य	बृहस्पति	हाँ			सूर्य
६		बुध	बुध केतु	हाँ	बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७	बृहस्पति	शुक्र	शुक्र बुध		शनि		शुक्र
८		मंगल	मंगल शनि	हाँ		चन्द्रमा	चन्द्रमा
९	केतु	बृहस्पति	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
१०	राहु	शनि	शनि		मंगल	बृहस्पति	शनि
११	शुक्र	शनि	शनि				बृहस्पति
१२	शनि	बृहस्पति	बृहस्पति		शुक्र केतु	बुध राहु	राहु

Sample DOB-16:01:1976 TOB-11:25:08AM POB-Patna (bihar)

ग्रह स्थिति

ग्रह		राशि		राशि	डिग्री	नक्षत्र चरन	न0 पति	सप्तकारक	विशेष	विशेष
AC	लग्न		मेष	मंगल	01:47:25	अश्विनी.1	केतु	...	...	
☉	सूर्य		मकर	शनि	01:42:10	उत्तराषाढ़.2	सूर्य	दारा	शत्रु के भाव में	शुभ ग्रह के साथ
☽	चन्द्र		मिथुन	बुध	19:25:24	आर्द्रा.4	राहु	मात्रि	शत्रु के भाव में	—
♂	मंगल व		वृष	शुक्र	21:20:39	रोहिणी.4	चन्द्र	भ्रात्रि	तटस्थ भाव में	—
☿	बुध व		मकर	शनि	15:23:53	श्रवण.2	चन्द्र	अपत्या	मित्र के भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
♃	गुरु		मीन	गुरु	23:27:35	रेवती.3	बुध	अमात्य	स्वगृही	—
♀	शुक्र		वृश्चिक	मंगल	24:16:27	ज्येष्ठा.3	बुध	आत्म	तटस्थ भाव में	—
♄	शनि व		कर्क	चन्द्र	06:20:07	पुष्य.1	शनि	ज्ञाति	तटस्थ भाव में	—
☊	राहु व		तुला	शुक्र	26:05:51	विशाखा.2	गुरु	...	मित्र के भाव में	—
☋	केतु व		मेष	मंगल	26:05:51	भरणी.4	शुक्र	...	मित्र के भाव में	—
♅	हर्षल		तुला	शुक्र	13:18:45	स्वाति.2	राहु	...	—	दुष्ट ग्रह के साथ
♆	नेपच्यून		वृश्चिक	मंगल	19:29:34	ज्येष्ठा.1	बुध	...	—	शुभ ग्रह के साथ
♇	प्लूटो व		कन्या	बुध	18:11:00	हस्त.3	चन्द्र	...	—	—

लग्न कुण्डली

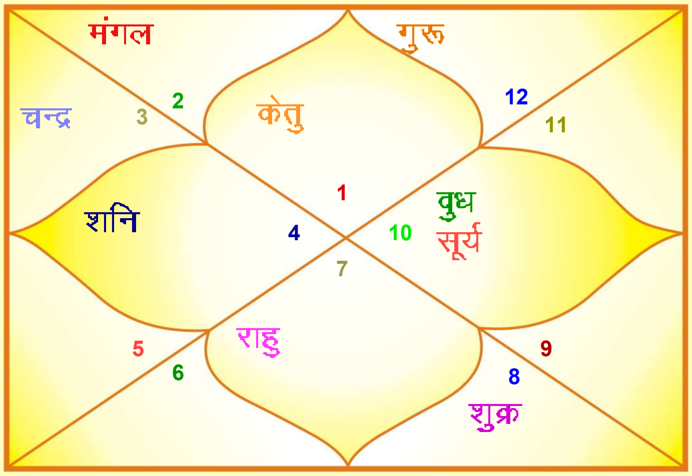

नवांश कुण्डली

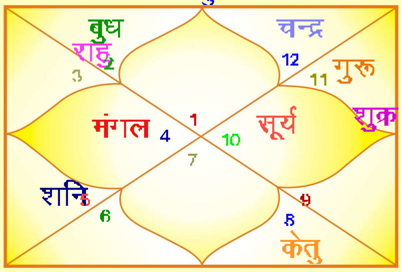

चन्द्र कुण्डली

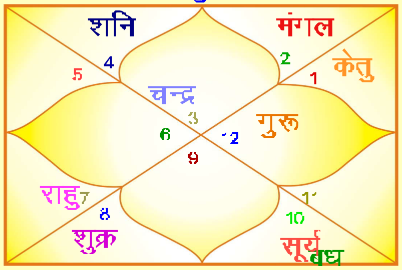

ग्रह से ग्रह और ग्रह से लग्न के बीच की दूरी

	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	---	270	78	50	284	352	232	95	204	24	192	228	166
सूर्य	90	---	168	140	14	82	323	185	294	114	282	318	256
चन्द्र	282	192	---	332	206	274	155	17	127	307	114	150	89
मंगल	310	220	28	---	234	302	183	45	155	335	142	178	117
बुध	76	346	154	126	---	68	309	171	281	101	268	304	243
गुरु	8	278	86	58	292	---	241	103	213	33	200	236	175
शुक्र	128	37	205	177	51	119	---	222	332	152	319	355	294
शनि	265	175	343	315	189	257	138	---	110	290	97	133	72
राहु	156	66	233	205	79	147	28	250	---	180	347	23	322
केतु	336	246	53	25	259	327	208	70	180	---	167	203	142
हर्षल	168	78	246	218	92	160	41	263	13	193	---	36	335
नेपच्यून	132	42	210	182	56	124	5	227	337	157	324	---	299
प्लूटो	194	104	271	243	117	185	66	288	38	218	25	61	---

0,1,359	कन्जक्शन	59,60,61,299,300,301	सेक्सटाइल	89,90,91,269,270,271	स्क्वायर
119,120,121,239,240,241	ट्राइन	149,150,151,209,210,211	क्वीन्कन्स	179,180,181	अपोजीसन

Sample DOB-16:01:1976 TOB-11:25:08AM POB-Patna (bihar)

षोडश वर्ग

लग्न(जन्म) कुण्डली

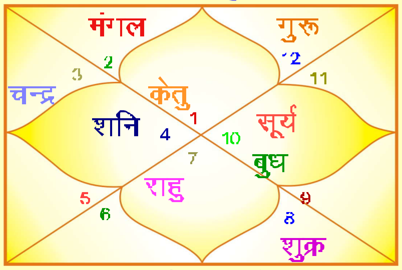

होरा कुण्डली

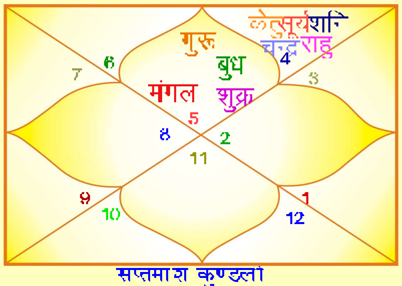

द्रेष्काण कुण्डली

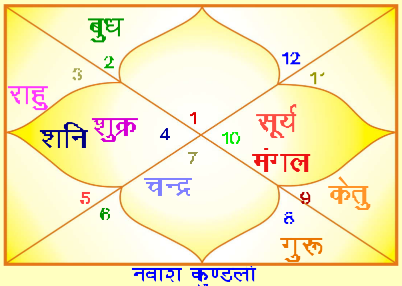

चतुर्थांश कुण्डली

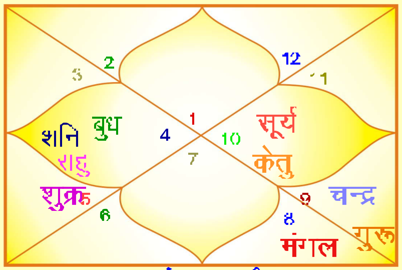

सप्तमांश कुण्डली

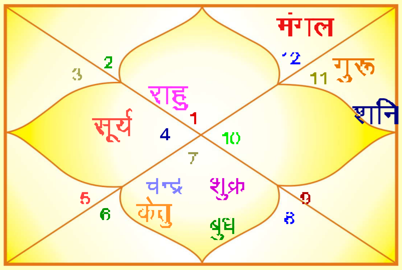

नवांश कुण्डली

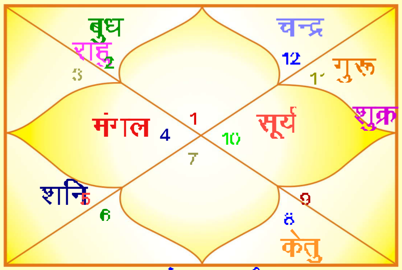

दशमांश कुण्डली

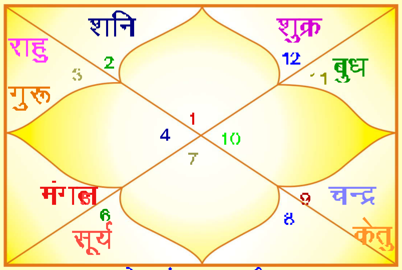

D1	मुख्य कुण्डली, सभी मुद्दों के लिए
D2	धन दौलत के लिए
D3	सहोदरों का जीवन और स्वास्थ्य
D4	भाग्य और रिहायशी मकान
D7	संतान और उनकी संतान
D9	जीवनसाथी और उनका स्वास्थ्य
D10	कारोबार और किसी भी कार्य में सफलता
D12	माता-पिता का जीवन और स्वास्थ्य
D16	वाहन से संबंधित बातें
D20	आध्यात्मिक रूझान
D24	शिक्षा, ज्ञान और समझ
D27	ताकत और दुर्बलता
D30	दरिद्रता, कठिनाईयां और दुर्नीति
D40	शुभ-अशुभ घटनाएं
D45	सभी मुद्दों के लिए
D60	सभी मुद्दों के लिए

द्वादशांश कुण्डली

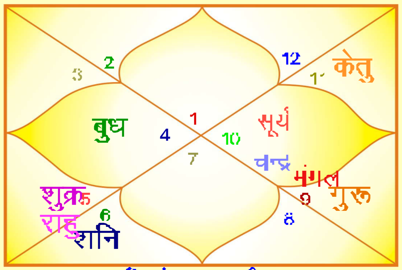

षोडशांश कुण्डली

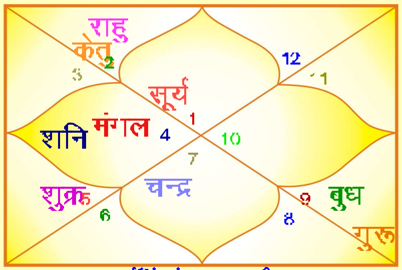

विंशांश कुण्डली

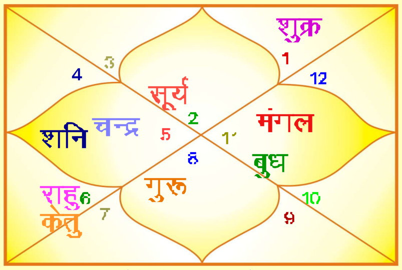

चतुर्विंशांश कुण्डली

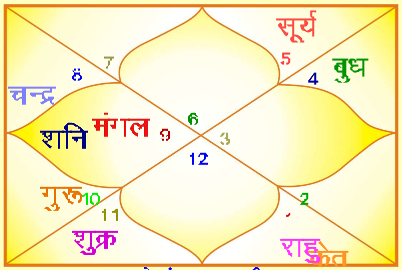

सप्तविंशांश कुण्डली

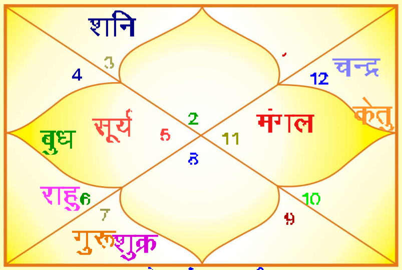

त्रिंशांश कुण्डली

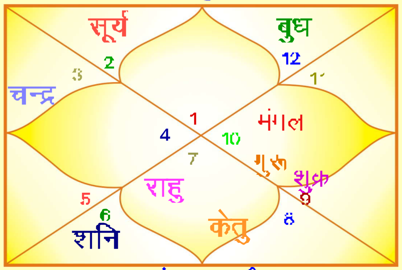

खवेदांश कुण्डली

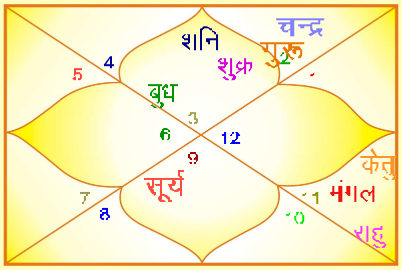

अक्षवेदांश कुण्डली

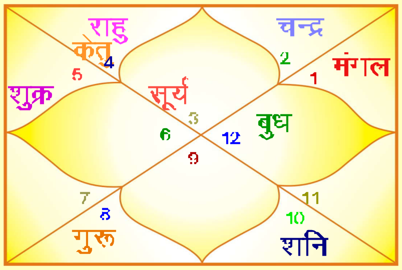

षष्ठ्यंश कुण्डली

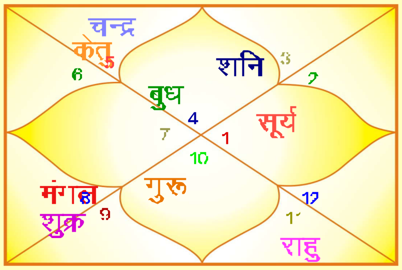

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : ०२३:३१:२१) : राहु : 0 व 9 मा 10 दि

क0 स0		ग्रह दशा	अवधि	से —————— तक
1	☊	राहु महादशा	0 y.9 m.10 d.	16:01:1976 --- 27:10:1976
2	♃	गुरू महादशा	16 y.0 m.0 d.	27:10:1976 --- 27:10:1992
3	♄	शनि महादशा	19 y.0 m.0 d.	27:10:1992 --- 27:10:2011
4	☿	बुध महादशा	17 y.0 m.0 d.	27:10:2011 --- 27:10:2028
5	☋	केतु महादशा	7 y.0 m.0 d.	27:10:2028 --- 27:10:2035
6	♀	शुक्र महादशा	20 y.0 m.0 d.	27:10:2035 --- 27:10:2055
7	☉	सूर्य महादशा	6 y.0 m.0 d.	27:10:2055 --- 27:10:2061
8	☽	चन्द्र महादशा	10 y.0 m.0 d.	27:10:2061 --- 27:10:2071
9	♂	मंगल महादशा	7 y.0 m.0 d.	27:10:2071 --- 27:10:2078

विंशोत्तरी अन्तर्दशा

राहु दशा

अन्तर्दशा	से तक
राहु	
गुरू	
शनि	
बुध	
केतु	
शुक्र	
सूर्य	
चन्द्र	
मंगल	16:01:1976 - 27:10:1976

गुरू दशा

अन्तर्दशा	से तक
गुरू	27:10:1976 - 15:12:1978
शनि	15:12:1978 - 27:06:1981
बुध	27:06:1981 - 03:10:1983
केतु	03:10:1983 - 08:09:1984
शुक्र	08:09:1984 - 10:05:1987
सूर्य	10:05:1987 - 26:02:1988
चन्द्र	26:02:1988 - 27:06:1989
मंगल	27:06:1989 - 03:06:1990
राहु	03:06:1990 - 27:10:1992

शनि दशा

अन्तर्दशा	से तक
शनि	27:10:1992 - 30:10:1995
बुध	30:10:1995 - 10:07:1998
केतु	10:07:1998 - 18:08:1999
शुक्र	18:08:1999 - 18:10:2002
सूर्य	18:10:2002 - 30:09:2003
चन्द्र	30:09:2003 - 01:05:2005
मंगल	01:05:2005 - 09:06:2006
राहु	09:06:2006 - 15:04:2009
गुरू	15:04:2009 - 27:10:2011

बुध दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
बुध	27:10:2011 - 25:03:2014
केतु	25:03:2014 - 22:03:2015
शुक्र	22:03:2015 - 20:01:2018
सूर्य	20:01:2018 - 26:11:2018
चन्द्र	26:11:2018 - 27:04:2020
मंगल	27:04:2020 - 25:04:2021
राहु	25:04:2021 - 11:11:2023
गुरू	11:11:2023 - 17:02:2026
शनि	17:02:2026 - 27:10:2028

केतु दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
केतु	27:10:2028 - 25:03:2029
शुक्र	25:03:2029 - 25:05:2030
सूर्य	25:05:2030 - 30:09:2030
चन्द्र	30:09:2030 - 01:05:2031
मंगल	01:05:2031 - 27:09:2031
राहु	27:09:2031 - 15:10:2032
गुरू	15:10:2032 - 21:09:2033
शनि	21:09:2033 - 30:10:2034
बुध	30:10:2034 - 27:10:2035

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
शुक्र	27:10:2035 - 26:02:2039
सूर्य	26:02:2039 - 26:02:2040
चन्द्र	26:02:2040 - 27:10:2041
मंगल	27:10:2041 - 27:12:2042
राहु	27:12:2042 - 27:12:2045
गुरू	27:12:2045 - 27:08:2048
शनि	27:08:2048 - 27:10:2051
बुध	27:10:2051 - 27:08:2054
केतु	27:08:2054 - 27:10:2055

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
सूर्य	27:10:2055 - 14:02:2056
चन्द्र	14:02:2056 - 15:08:2056
मंगल	15:08:2056 - 21:12:2056
राहु	21:12:2056 - 14:11:2057
गुरू	14:11:2057 - 02:09:2058
शनि	02:09:2058 - 15:08:2059
बुध	15:08:2059 - 21:06:2060
केतु	21:06:2060 - 27:10:2060
शुक्र	27:10:2060 - 27:10:2061

चन्द्र दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
चन्द्र	27:10:2061 - 27:08:2062
मंगल	27:08:2062 - 28:03:2063
राहु	28:03:2063 - 26:09:2064
गुरू	26:09:2064 - 26:01:2066
शनि	26:01:2066 - 27:08:2067
बुध	27:08:2067 - 26:01:2069
केतु	26:01:2069 - 27:08:2069
शुक्र	27:08:2069 - 28:04:2071
सूर्य	28:04:2071 - 27:10:2071

मंगल दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
मंगल	27:10:2071 - 24:03:2072
राहु	24:03:2072 - 12:04:2073
गुरू	12:04:2073 - 19:03:2074
शनि	19:03:2074 - 28:04:2075
बुध	28:04:2075 - 24:04:2076
केतु	24:04:2076 - 20:09:2076
शुक्र	20:09:2076 - 20:11:2077
सूर्य	20:11:2077 - 28:03:2078
चन्द्र	28:03:2078 - 27:10:2078

विंशोत्तरी दशा

बुध महादशा (27:10:2011 से 27:10:2028)

बुध अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	27:10:2011
केतु	29:02:2012
शुक्र	20:04:2012
सूर्य	14:09:2012
चन्द्र	28:10:2012
मंगल	10:01:2013
राहु	02:03:2013
गुरू	12:07:2013
शनि	06:11:2013

केतु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	25:03:2014
शुक्र	15:04:2014
सूर्य	15:06:2014
चन्द्र	03:07:2014
मंगल	02:08:2014
राहु	23:08:2014
गुरू	16:10:2014
शनि	03:12:2014
बुध	30:01:2015

शुक्र अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शुक्र	22:03:2015
सूर्य	10:09:2015
चन्द्र	01:11:2015
मंगल	26:01:2016
राहु	27:03:2016
गुरू	29:08:2016
शनि	15:01:2017
बुध	27:06:2017
केतु	21:11:2017

सूर्य अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	20:01:2018
चन्द्र	05:02:2018
मंगल	03:03:2018
राहु	21:03:2018
गुरू	06:05:2018
शनि	17:06:2018
बुध	05:08:2018
केतु	18:09:2018
शुक्र	06:10:2018

चन्द्र अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
चन्द्र	26:11:2018
मंगल	09:01:2019
राहु	08:02:2019
गुरू	26:04:2019
शनि	04:07:2019
बुध	24:09:2019
केतु	06:12:2019
शुक्र	06:01:2020
सूर्य	01:04:2020

मंगल अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
मंगल	27:04:2020
राहु	18:05:2020
गुरू	12:07:2020
शनि	29:08:2020
बुध	25:10:2020
केतु	16:12:2020
शुक्र	06:01:2021
सूर्य	07:03:2021
चन्द्र	25:03:2021

राहु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	25:04:2021
गुरू	11:09:2021
शनि	13:01:2022
बुध	10:06:2022
केतु	19:10:2022
शुक्र	13:12:2022
सूर्य	17:05:2023
चन्द्र	02:07:2023
मंगल	18:09:2023

गुरू अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
गुरू	11:11:2023
शनि	01:03:2024
बुध	10:07:2024
केतु	05:11:2024
शुक्र	23:12:2024
सूर्य	10:05:2025
चन्द्र	20:06:2025
मंगल	28:08:2025
राहु	16:10:2025

शनि अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शनि	17:02:2026
बुध	22:07:2026
केतु	08:12:2026
शुक्र	04:02:2027
सूर्य	17:07:2027
चन्द्र	05:09:2027
मंगल	25:11:2027
राहु	22:01:2028
गुरू	18:06:2028

गोचर शनि

(शनि साढ़ेसाती)

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चर।

सार्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चन्द्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
शनि साढ़ेसाती का पहला चक्र					
प्रथम ढ़ैया	वृष	07:06:2000	23:07:2002	2 y.1 m.15 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	वृष	08:01:2003	07:04:2003	0 y.2 m.28 d.	
द्वितिय ढ़ैया	मिथुन	23:07:2002	08:01:2003	0 y.5 m.17 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	मिथुन	07:04:2003	06:09:2004	1 y.5 m.0 d.	
तृतिय ढ़ैया	कर्क	06:09:2004	13:01:2005	0 y.4 m.7 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	कर्क	26:05:2005	01:11:2006	1 y.5 m.7 d.	
कंटक शनि	कन्या	10:09:2009	15:11:2011	2 y.2 m.5 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	कन्या	16:05:2012	04:08:2012	0 y.2 m.19 d.	
अष्टम शनि	मकर	24:01:2020	29:04:2022	2 y.3 m.4 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	मकर	12:07:2022	17:01:2023	0 y.6 m.6 d.	
शनि साढ़ेसाती का दूसरा चक्र					
प्रथम ढ़ैया	वृष	08:08:2029	05:10:2029	0 y.1 m.27 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	वृष	17:04:2030	31:05:2032	2 y.1 m.14 d.	
द्वितिय ढ़ैया	मिथुन	31:05:2032	13:07:2034	2 y.1 m.12 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)					
तृतिय ढ़ैया	कर्क	13:07:2034	27:08:2036	2 y.1 m.15 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)					
कंटक शनि	कन्या	22:10:2038	05:04:2039	0 y.5 m.13 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	कन्या	13:07:2039	28:01:2041	1 y.6 m.16 d.	
अष्टम शनि	मकर	06:03:2049	10:07:2049	0 y.4 m.4 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	मकर	04:12:2049	25:02:2052	2 y.2 m.22 d.	
शनि साढ़ेसाती का तीसरा चक्र					
प्रथम ढ़ैया	वृष	28:05:2059	11:07:2061	2 y.1 m.13 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	वृष	13:02:2062	07:03:2062	0 y.0 m.22 d.	
द्वितिय ढ़ैया	मिथुन	11:07:2061	13:02:2062	0 y.7 m.4 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	मिथुन	07:03:2062	24:08:2063	1 y.5 m.18 d.	
तृतिय ढ़ैया	कर्क	24:08:2063	06:02:2064	0 y.5 m.14 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	कर्क	09:05:2064	13:10:2065	1 y.5 m.4 d.	
कंटक शनि	कन्या	30:08:2068	04:11:2070	2 y.2 m.5 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)					
अष्टम शनि	मकर	15:01:2079	12:04:2081	2 y.2 m.26 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	मकर	03:08:2081	07:01:2082	0 y.5 m.5 d.	

अन्धे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी कुण्डली के दसवें भाव में दो आपस में शत्रु ग्रह बैठ जायें, तो ऐसी कुण्डली को अंधें ग्रहों की कुण्डली (टेवा) कहते हैं। कुण्डली में दसवां भाव जातक का कर्म स्थान है, इस घर का जातक की कमाई से भी संबंध है, इसलिए ऐसे भाव में दो या दो से अधिक आपस में शत्रुता वाले ग्रह बैठ जायें तो, जातक के कर्मक्षेत्र में असंतुलन की स्थिति पैदा हो जाती है। जातक के नौकरी या व्यापार में पूरी तरह से स्थिरता नहीं आ पाती है। दसवें भाव में बैठे अंधे हो चुके ग्रहों को ठीक करने के लिए दस अंधों को भोजन कराना चाहिए।

निष्कर्ष - आपकी कुण्डली अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) नहीं है।

आधे अन्धे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि चौथे भाव में सूर्य और सातवें भाव में शनि स्थित हों तो ऐसी कुण्डली को आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली कहते है। इस ग्रह स्थिति का जातक के मानसिक स्थिति और व्यवसायिकजीवन पर अशुभ असर होगा। जातक की मानसिक शांति में काफी कमी आ सकती है। चौथा भाव हमारे गृहस्थ सुख का भी घर है, इस ग्रह स्थिति के कारण गृहस्थ सुख में भी कमी आने की संभावना होती है।

निष्कर्ष   यह कुण्डली आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली(टेवा) नहीं है।

धर्मी कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली में बृहस्पति के साथ शनि बैठा हुआ है, तो ऐसी कुण्डली को धर्मी कुण्डली (टेवा) कहते हैं। ऐसे जातक के जीवन में कभी भी कोई बड़ी समस्या नही आ सकती है, जो कि जीवन में उथल पुथल मचा दे। किसी बहुत मुश्किल या कष्ट के समय उसे कहीं न कहीं से दैवीय सहायता प्राप्त हो जाएगी।

निष्कर्ष   यह कुण्डली धर्मी कुण्डली (टेवा) नहीं है।

नाबालिग कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली के पहले, चौथे, सातवें और दसवें भाव (केन्द्र स्थान) में कोई भी ग्रह नहीं बैठा हुआ है या उनमे केवल बुध बैठा हुआ है। ऐसी कुण्डली, नाबालिग टेवा (कुंडली) कहलाती है। इस स्थिति में जातक की किस्मत बारह साल तक शक के दायरे में होती है।

लाल किताब के अनुसार, नाबालिक टेवा वाले जातक पर बारह वर्षों तक प्रत्येक वर्ष एक-एक ग्रह का प्रभाव निम्न रूपेड़ पड़ा करता है। जीवन पर पड़ने वाले दुवित प्रभाव की अनुकूलता हेतु निम्नांकित भाव स्थित ग्रह का उपाय करना चाहिए।

(१) उम्र के पहले साल में सातवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(२) उम्र के दूसरे साल में चौथे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(३) उम्र के तीसरे साल में नवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(४) उम्र के चौथे साल में दसवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(५) उम्र के पांचवें साल में ग्यारहवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(६) उम्र के छठे साल में तीसरे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(७) उम्र के सातवें साल में दूसरे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(८) उम्र के आठवें साल में पांचवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(९) उम्र के नवें साल में छठे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(१०) उम्र के दसवें साल में बारहवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(११) उम्र के ग्यारहवें साल में पहले भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(१२) उम्र के बारहवें साल में आठवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।

निष्कर्ष यह कुंडली (टेवा) नाबालिग टेवा नहीं है।

लाल किताब पितृऋण और उपाय

पितृ ऋण–

आपकी कुण्डली में बुध दूसरे या बारहवें भाव में नही बैठा है और चन्द्रमा तीसरे या छठे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यह आपकी कुण्डली में पितृ ऋण को दर्शाता है। आपको लाल किताब में बताये हुए उपायों का पालन करना चाहिए। यह पितृ ऋण बुध से संबंधित है। आपको बुध सेसंबंधित लाल किताब के उपाय करने चाहिए।

ऋण के कारण और लक्षण–

१ यदि कुल पुरोहित बदलने की आवश्यकता होती है।

२–यदि घर के आस–पास का कोई धार्मिक स्थल नष्ट कर दिया गया हो।

३ घर के आस पास में कोई पीपल या बरगद का पेड़ नष्ट कर दिया गया हो।

प्रभाव–

लाल किताब के अनुसार, ऐसे व्यक्ति के बाल में जब सफेदी आने लगती है, तो घर की धन सम्जीवनसाथी अपने आप नष्ट होनी शुरु हो जाती है। तथा सिर पर चोटी के स्थान से बाल गायब हो जाता है, और ऐसा व्यक्ति गले में माला या कंठी पहनना शुरु कर देता है। उस व्यक्ति के बारे में गलत अफवाहें उड़नी शुरु हो जाती हैं। उसे बिना गलती ही जेल जाना पड़ सकता है।

उपाय

१ अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य से बराबर बराबर पैसा इक्ट्ठा करें और किसी धार्मिक स्थान में दान करें।

२–अपने घर के आस–पास के किसी धार्मिक स्थल पर जाकर वहां की साफ–सफाई करें।

३ घर के आस पास कोई पीपल या बरगद का पेड़ हो, तो उसकी सेवा तथा देख भाल करें, और उसमें पानी डालें।

रिश्तेदारी का ऋण

आपकी कुण्डली में केतु पहले भाव या आठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यह आपके कुण्डली में लागू हो रहे रिश्तेदारी के ऋण का परिचायक

है।

ऋण के कारण और लक्षण

१ किसी मित्र को धोखा दिया गया हो, या धोखे से उसे मार दिया गया हो।

२ किसी के घर को जला दिया गया हो।

३ किसी की खड़ी फसल को बर्बाद कर दिया गया हो।

४ किसी के पाले हुए जानवर को मरवा दिया गया हो।

प्रभाव-

ऐसा व्यक्ति जवानी के दिनों में बहुत ज्यादा पैसा कमाता है, और अपने पैरो पर खड़ा होता है। परन्तु उसके बाद उसके पास धन नहीं होता, वह एकदम शक्तिहीन हो जाता है। उसको कोई औलाद नहीं होती है। उसके जोड़ों में बराबर दर्द बना रहता है, तथा आंखों में परेशानी रहती है। लड़ाई-झगड़ों में भी उसेपराजय का सामना करना पड़ता है।

उपाय

लाल किताब के अनुसार, अपने परिवार के सारे सदस्यों से बराबर मात्रा में धन लेकर उसे किसी डाक्टर को देना चाहिए। जिससे की वह गरीब लोगों का मुफ्त में इलाज कर सके ।

बहन या बेटी का ऋण-

आपकी कुण्डली में चंद्रमा तीसरे या छठे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति कीवजह से आपकी कुण्डली में बुध पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। लाल किताब के अनुसार, यह आपकी कुण्डली में लागू हो रहे बहन या बेटी के ऋण का परिचायक है।

ऋण के कारण और लक्षण

१-आपके घर में किसी ने दूसरों की बेटी या बहन को धोखा दिया हो या उसे मरवा दिया हो।

२ ऐसा व्यक्ति नाबालिक लड़को को बेचता है, या अपहरण करता

है।

प्रभाव

१ बहन या बेटी की शादी पर अनहोनी घटनायें घटने लगें।

२ पैसा बर्बाद हो जाये।

३ मर्दाना ताकत की कमी होने लगे।

४ दांत अपने आप गिरने लगें।

उपाय–

अपने परिवार के सारे सदस्यों से पीली कौड़ी लेकर उसको जलाएं तथा राख को बहते हुए पानी में बहाएं।

आपको अपने परिवार के सारे सदस्यों से बराबर मात्रा में धन लेकर बुधवार के दिन शुद्ध देशी घी में हलवा पूरी बनवा कर १०१ कन्याओं को खिलायें और उन्हें दक्षिणा दें।

लाल किताब में वर्जित और अवर्जित नियम

(१)आपकी कुण्डली में बुध नीच का है, आपको बुध से संबंधित वस्तुओं का दान नहीं लेना चाहिए।

(२)यदि आपके घर के आखिरी में अंधेरी कोठरी है जिसमें दरवाजे के अतिरिक्त रोशनी आने के लिए कोई भी जगह नहीं है तो उसमें रोशनी के लिए रोशनदान या खिड़की नहीं खोलनी चाहिए, अन्यथा आपकी संतान पर इसका बुरा असर पड़ सकता है।

किसी कारण वश ऐसी कोठरी की छत बदलवानी पड़े तो पुरानी छत को गिराने से पहले उस कोठरी के उपर नई छत डलवा लें।

(३)यदि आपके घर में सोने चांदी के गहनों या रूपये पैसे रखने के लिए सेफ, आलमारी, तिजोरी इत्यादि है, तो उसे कभी भी पुरी तरह खाली नहीं रखें।

(४)अपने मकान के कुछ हिस्सों में मिट्टी वाला स्थान अवश्य रखें।

(५)दक्षिणमुखी मकान में न रहें।

(६)झूठ न बोलें।

(७)झूठी गवाही न दें।

(८)अपशब्द न बोलें।

(९)किसी को गाली न दें।

(१0)क्रूरता न करें।

(११)ईश्वर पर विश्वास रखें।

(१२)देवी देवताओं की उपासना श्रद्धापूर्वक करें।

(१३)मांस-मछली न खायें।

(१४)शराब न पीयें।

(१५)कपड़े सलीके से

पहनें।

(१६)कान नाक छिदवायें।

(१७)दांत साफ रखें।

(१८)संयुक्त परिवार में रहें।

(१९)ससुराल से मधुर संबंध बनाकर रखें।

(२०)कन्याओं की पूजा करें। उन्हें हरे वस्त्र, उत्तम भोजन आदि देकर प्रसन्न रखें।

(२१)बहन-बेटी को मीठी वस्तुओं का उपहार दें।

(२२)जिस प्रकार माता की सेवा करते हैं, उसी प्रकार जीवनसाथी की भी उचित देखभाल करें।

(२३)भाभी (बड़े भाई की जीवनसाथी) की सेवा करें।

(२४)परिवार के सदस्यों का पालन करें।

(२५)मुफ्त में किसी से कुछ न लें।

(२६)निःसंतान की संपत्ति न लें।

(२७)बड़ों के चरण स्पर्श करके आशिर्वाद प्राप्त करें।

(२८)यथा संभव दक्षिणमुखी मकान में न रहें।

(२९)घर की छत में छेद न रखें।

(३०)घर में थोड़ी बहुत कची जगह अवश्य रखें।

(३१)विकलागों को भोजन दें, उनकी सहायता करें।

(३२)पड़ोस में कोई असहाय विधवा हो तो उनकी सहायता करें।

(३३)मनुष्येतर जीवों - गाय, कुत्ता, कौवा, बन्दर आदि को भोजन

दें।

(३४)काने और गंजे आदमी से सावधान रहें।

(३५)नाक को हमेशा साफ रखें।

ग्रहफल लाल–किताब

आपकी लाल किताब कुण्डली गें रार्य दरावें शाव गें रिथत है। आपगें एक नेतृत्वकर्ता के गुण विद्यगान होंगे और आप न्यायप्रिय होंगे। आप किरी रांरथा के प्रगुख, नेता या न्यायाधीश हो राकते हैं। आप ईगानदार होंगे और किरी को धोखा नहीं देंगे। चाहे आप रारकारी विशाग या निजी रांरथान गें नौकरी करें या व्यापार करें, आपको धन, नाग और यश प्राप्त होगा। आपको नौकरों का रुाख प्राप्त होगा। रारकार रो आपको लाश शी प्राप्त होंगे। आपका रवारथ्य उत्तग होगा। आप किरी चीज पर जल्दी विश्वारा नहीं करेंगे और बहुत शक्की होंगे। आपको रांतान का बहुत रुाख प्राप्त नहीं हो राकता है। 19 राल की आयु गें आपको अपने पिता रो अलग होना पड़ राकता है। आपके परिवार का कोई व्यक्ति उच्च पद प्राप्त करेगा या किरी रांरथा का प्रगुख होगा और उन्हें रारकार रो राग्गान प्राप्त होगा।

यदि आपके घर का गुख्य द्वार पश्चिग दिशा गें हुआ, आपने अपना रिार नंगा रखा या अपने राज को किरी और को बताया तो आपका रार्य कगजोर हो राकता है। यदि आपका रार्य किरी कारणवश कगजोर हो जाता है तो आपको 34 राल की आयु तक परेशानियों का रागना करना पड़ राकता है। यदि आप लकड़ी, लोहा, काली चीजों, भैंरा या गशीनरी रो राम्बन्धित कोई व्यवराय करते हैं तो आपको उरागें हानि हो राकती है। आपको पैतृक राम्पत्ति

प्राप्त नहीं हो सकती है। आपके पिता का सुख कम हो सकता है। आपको घुटनों में दर्द हो सकता है और आपकी आँखें कमजोर हो सकती हैं। यदि आप अपनी पत्नी के घर पर रहते हैं या बिजली अथवा कोयले से सम्बन्धित कोई व्यवसाय अपने ससुराल वालों के साथ करते हैं तो आपको उसमें हानि हो सकती है। आपको सरकार के कारण कोई परेशानी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– अपनी गुप्त बातें किसी और को न बतायें।
2– अपने सिर पर सूर्य की रोशनी न पड़ने दें।

उपाय :

1– अपने सिर पर सफेद टोपी या पगड़ी बांधें।
2– अपने पैतृक घर पर नल लगवायें।

आपकी लाल किताब कुण्डली में चन्द्रमा तीसरे भाव में स्थित है। आपका चन्द्रमा आपकी मददकरेगा और आपको बुरी चीजों से बचायेगा। आपको लड़ाई में कभी हार का सामना नहीं करना पड़ेगा। आप बहादुर होंगे और युद्ध में भी नहीं परास्त होंगे। आप हर प्रकार की चुनौतीया मुश्किल का सामना करने में सक्षम होंगे। आप परिश्रमी और मृदु वाणी बोलने वाले होंगे। आपका चरित्र अच्छा होगा। आपको भाई का सुख प्राप्त होगा और आपको उससे धन भी मिलेगा। आपके जन्म के बाद से हर तीसरा महीना अति उत्तम होगा। आपको मानसिक शांति प्राप्त होगी। आप धनी होंगे और आपका पारिवारिक जीवन आनन्द से भरा होगा। चोरी से आपकी रक्षा होगी। आप एक सज्जन व्यक्ति होंगे और सांसारिक जीवन में एक साधु की तरह व्यवहार करेंगे। यदि आप साधु बन जाते हैं तो आपको देवी शक्ति प्राप्त होगी। आप बहुत धनी होंगे और आपका जीवन खुशहाल होगा। आपके परिवार में पुरूषों की संख्या अधिक हो सकती है। यदि आपके परिवार में महिलाओं को सम्मान मिलेगा तो आपका भाग्य चमकेगा। यदि आप अपने जीवनसाथी से प्रेम करेंगे और उनका ध्यान रखेंगे तो आपको शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। प्रकृति आपकी सहायता करेगी। आपमें गरीबों के प्रति दया होगी और आप सदैव उनकी मदद करेंगे। आपकी माता को आपके पिता से अधिक सुख मिलेगा। उनमें से एक दीर्घजीवी होंगे। आपकी मानसिक शक्ति अच्छी होगी और आप बुद्धिमान होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति तीव्र होगी। यदि आप अपनी पुत्री के विवाह के समय उसके ससुराल वालों से धन लेते हैं तो आपको अशुभ परिणाम प्राप्त होंगे। आपको सरकार और शैक्षणिक संस्था से सम्मान प्राप्त होगा। आपको शतरंज या तैराकी में रूचि हो सकती है।

यदि आप छात्रावास अधीक्षक हैं और छात्रों की चीजों की छानबीन करते हैं, संबधियों का विरोध करते हैं, भाई–बहनों का हक हड़पते हैं या विवाहित बहन का धन वापस नहीं करते हैं तो आपका चन्द्रमा कमजोर हो सकता है। यदि आपका चन्द्रमा किसी कारणवश कमजोर हो जाता है और आप अपने भाई–बहनों का अपमान करते हैं या उन्हें सताते हैं तो आपको यात्रा में हानि हो सकती है और आपके स्थान पर चोरी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– अपने भाई–बहनों से झगड़ा न करें।
2– अनाथों की चीजें न हड़पें।

उपाय :

1– बहन या लड़की के विवाह के समय कन्यादान करें।
2– कन्याओं की सेवा करें या दुर्गा पाठ करें।
3– पुत्र के जन्म के समय गुड़, गेहूँ, तॉबा का दान करें।
4– पुत्री के जन्म के समय दूध, चांदी, चावल का दान करें।

आपकी लाल किताब कुण्डली गें गंगल दूरारे शाव गें रिथत है। आप दयालु, विनग्र और बचाने वाले होंगे। आप अपने भाइयों और गित्रों की देखभाल करेंगे। आप अपने छोटे भाई रो अपने पुत्र की तरह प्रेग करेंगे और रादैव उराकी गदद करेंगे। आपका अपने शाई के प्रति रनेह और उराकी देखभाल आपके भाग्य गें वृद्धि करेगा। आप राहायता करने वाले होंगे और दूरारों की आवश्यकताओं को पूरा करेंगे। कई लोगों को आपरो राहायता प्राप्त होगी। जो शी आपरो गददगॉगेगा, आप उराकी राहायता करने रो इन्कार नहीं करेंगे। इरा कारण रो आप अपने जीवन गें किरी रांकट का रागना नहीं करेंगे और जीवन के हर क्षेत्र गें प्रगति करेंगे। आप किरी रांरथा के प्रगुख हो राकते हैं। लोगों के कल्याण के लिये आपको धन और राम्पत्ति गिलती रहेगी। आप लंगर, शण्डारे आदि का आयोजन शी करेंगे। आपके रारुरालवाले आपकी गदद करेंगे। आप राज्जन होंगे और आपकी इच्छा शक्ति गजबूत होगी। आपका परिश्रग आपको धनी बनायेगा। आपको जीवन गें रुख के राशी राधन प्राप्त होंगे। जब शी आपको धन की आवश्यकता होगी, वह अपने–आप आपको गिल जायेगा। आपको ईश्वर की कृपा रो अधिकधन प्राप्त होगा। आपको अपने व्यवराय गें उच्च पद प्राप्त होगा और आप एक अधिकारीबनकर शारान करेंगे। आप तीर्थयात्रा पर जायेंगे और आपको शुभ परिणाग प्राप्त होंगे। आपके विवाह के बाद आपके धन गें वृद्धि होगी।

यदि पराई औरतों के लिये आपके गन गें बुरी भावना हुयी, आपने अपने भाइयों और रांबंधियों के राथ धोखा किया, बुरी आदतें डाली तो आपका गंगल कगजोर हो राकता है। यदि

आपका गंगल किरी कारणवश कगजोर हो जाता है तो आपकी शिक्षा गें बाधा पहुॅच राकती है। आपको अपने व्यवसाय में हानि हो सकती है। आपके बड़े भाई 28 साल की आयु से पहलेशारीरिक कष्ट का रागना कर राकते हैं। यदि आपके कोई बडे भाई हैं तो आपको उगकासुख प्राप्त गहीं हो सकता है। उगकी स्थिति आपसे कमजोर हो सकती है या उन्हें रांतान राुख की प्राप्ति नहीं हो राकती है। आप अपनी रांतानों के कारण चिन्तित रह राकते हैं और आपको आर्थिक हानि हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– झगड़ों रो दूर रहें।
2– रादैव अपने अतिथियों की रोवा करें।

उपाय :

1– दोपहर के रागय बच्चों को गेहूॅ और गुड़ बॉटें।
2– अपने नाश्ते गें गीठा भोजन खायें।

आपकी लाल किताब कुण्डली में बुध दसवें भाव में स्थित है। आपके विभाग के सीनियर अधिकारी आपकी मदद करेंगे। आप राजनीति में दक्ष होंगे और लोगों को खुश करने का तरीका आपको पता होगा। आपको कई क्षेत्रों जैसे लेखन, सम्पादन आदि के बारे में जानकारी होगी। आप ठेकेदार बनकर धन कमा सकते हैं। आप समुद्री या विदेश यात्रा पर जा सकते हैं।आप शरारती और स्वार्थी हो सकते हैं। 50 साल की आयु के बाद आप एक आरामदायक जीवन व्यतीत करेंगे और आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आप प्रतिभावान, उत्तम आचरण करने वाले होंगे और अपना जीवन सही ढंग से व्यतीत करेंगे। आप लुभावनी बातों से अपना काम करवा लेंगे। आपकी मीठी जुबान लोगों को अपनी तरफ खींचने में मददगार होगी।आपके परिवार के लोगों को आपके व्यापार के द्वारा लाभ प्राप्त होगा।

यदि आपने नशीले पदार्थों का सेवन किया, अपने घर पर हरी बोतल में विदेशी शराब रखी, मछली का शिकार किया तो आपका बुध कमजोर हो सकता है। यदि आपका बुध किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपकी ऑख में कोई विकार हो सकता है। मांस–मदिरा का सेवन आपके लिये हानिकारक हो सकता है। आप दूसरों के लिये मूर्ख दोस्त हो सकते हैं।48 साल की आयु तक आपको पिता का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप दूसरों के साथचालबाजी कर सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– अपने घर पर चौड़ी पत्ती वाला पेड़, मनी प्लांट या तुलसी का पौधा न लगायें।

2– मछली व मदिरा का सेवन न करें।
3– गछली का शिकार न करें।

उपाय :

1– मजदूरों की सेवा करें।
2– खाने का एक भाग गछलियों को खिलायें।

आपकी लाल किताब कुण्डली गें बृहरपति बारहवें गाव गें रिथत है। आप विद्वान और परोपकारी होंगे। आपके परोपकारी काग आपके भाग्य गें वृद्धि करेंगे। आप अपना अधिकतर रागय पूजा गें व्यतीत करेंगे और इरारो आपके भाग्य गें बढ़ोतरी होगी। धन आपके लिये बहुत गहत्वपूर्ण नहीं होगा। आपको भौतिक रांरार रो अधिक गोह नहीं होगा। आपके पारा बहुत धनहोगा, लेकिन आपको अधिक धन का लालच नहीं रहेगा। यदि आप नियगित रूप रो ध्यान उपाराना करेंगे तो आपको अधिक लाभ प्राप्त होगा। आपका रवभाव राधु की तरह होगा। आपशुभ कार्यों गें धन खर्च करेंगे। आप कोई गलत काग नहीं करेंगे। खर्चे आपके लिये चिन्ता की बात नहीं होगी। आप कोई गलत काग नहीं करेंगे। यदि आपने ऐरा किया तो आपको

बड़ी हानि हो सकती है। आपकी संतान आपकी चिन्ता का कारण हो सकती है। आपको जीवन में सुख के सभी साधन उपलब्ध होंगे। आपका परिवार बढ़ेगा और आप खुश रहेंगे। आप चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे। आपका आशीर्वाद फलदायी होगा। यदि आपको कोई शाप देगा तो उसका आप पर प्रभाव नहीं होगा। यदि आप दलाल हैं तो आपको लाभ प्राप्त होगा।

यदि आपने असामाजिक काम किये, लोगों से हमेशा धन उधार माँगा, किसी को धोखा दिया तो आपका बृहस्पति कमजोर हो सकता है। यदि आपका बृहस्पति किसी कारणवश कमजोर होजाता है तो आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अधिक वाचाल होना आपके लिये अच्छा नहीं हो सकता है। आध्यात्म की राह आपके लिये लाभकारी नहीं हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– ऐसा कोई काम न करें, जिससे लोग आपके विरूद्ध हो जायें।
2– किसी को धोखा न दें।

उपाय :

1– गुरू, पिता और साधु की सेवा करें।
2– पीपल के वृक्ष को जल दें।

आपकी लाल किताब कुण्डली में शुक्र आठवें भाव में स्थित है। आपकी आय उत्तम होगी। आपको झगड़ों या विवादों में हार का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपको अपनी संतान के स्वास्थ्य के बारे में सावधान रहना चाहिये। आप परिश्रमी होंगे और मेहनत करने से कभी नहीं डरेंगे। लेकिन आपका आलस्य आपको निकम्मा बना सकता है। आपको जीवनसाथी और संतानका उत्तम सुख प्राप्त होगा। आपको अपने जन्मस्थान से दूर रहना पड़ सकता है। आपको पानी संबंधित कामों, समुद्री यात्रा, विदेशी महिलाओं से सजग रहना चाहिये। आपकी पत्नी जो कुछ भी कहेगी, वह सच हो जायेगा और नहीं बदलेगा। अतः आपको उन्हें परेशान या सताना नहीं चाहिये।

यदि आपका चरित्र खराब हुआ, आपने अपने ससुराल वालों के साथ धोखा किया, सींग रहित गाय पाली तो आपका शुक्र कमजोर हो सकता है। यदि आपका शुक्र किसी कारणवश कमजोरहो जाता है तो आप कर्ज के बोझ के नीचे दब सकते हैं। आप अधिकतर समय बीमार रह सकते हैं। आपकी पत्नी चिड़चिड़ी स्वभाव वाली हो सकती हैं। किसी भी व्यक्ति के लिये आर्थिक जमानत न दे, अन्यथा आपको उसका भुगतान करना पड़ सकता है। इससे आपका भाग्य प्रभावित हो सकता है। आपको 25 साल की आयु के बाद विवाह करना चाहिये, अन्यथाआपको पत्नी का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप बदनाम भी हो सकते हैं। अपने आलस्य, मांस–मदिरा का सेवन करने की आदत या पराई औरतों के साथ अनैतिक संबंध रखने के कारण आपको गुप्तांगों का कोई रोग हो सकता है। इसके कारण आपके कार्य में बाधा पहुँच सकती है। आप जीवन में कोई ऐसा काम कर सकते हैं, जिसके कारण आपको पछताना पड़ सकता है। यदि आपने अपनी पत्नी के साथ झगड़ा किया तो आपको हानि और हार का सामना करना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– भीख और दान न मांगें।
2– अपने ससुराल वालों को धोखा न दें।

उपाय :

– नाली में तांबे का सिक्का या फूल डालें।
2– धार्मिक स्थान पर सिर झुकायें।

आपकी लाल किताब कुण्डली में शनि चौथे भाव में स्थित है। आप एक सुखी जीवन व्यतीत करेंगे। आप विपरीत लिंग के लोगों से घिरे रहेंगे और आपके कई प्रेम प्रसंग होंगे। लेकिन आपको काम से घृणा हो जायेगी और आप धार्मिक व्यक्ति बन जायेंगे। जब आप बीमार होंगे तो शराब आपके लिये दवा साबित होगी। आप अपने संबंधियों की सेवा करेंगे। आपको माता–पिता में से किसी एक का सुख लम्बे समय तक मिलेगा। आप दूसरी महिलाओं में रूचि लेंगे, जो आपकी पत्नी के लिये हानिकारक होगा। अपने घर से दूर शिक्षा ग्रहण करना आपकेलिये अधिक लाभकारी

होगा।

यदि आप किराये के गकान गें रहेंगे, सांप का तेल या नशीले पदार्थ बेचेंगे तो आपका शनि कमजोर हो सकता है। यदि आपका शनि किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप क्रोधीऔर चालाक होंगे। आपको घर/सम्पत्ति का बहुत सुख प्राप्त नहीं होगा। आप बीगार होते हैं तो आपको शनि की वस्तुयें प्रयोग करनी चाहिये। आपकी माता दुःखी रह सकती हैं याउनको परेशानियों का सागना करना पड़ सकता है। यदि किसी विधवा स्त्री के साथ आपके अंतरंग संबंध हुये या उसके लिये धन खर्च किया, तो आपको धन हानि हो सकती है। आपकोउदर संबंधित कोई रोग हो सकता है। दूसरे लोग आपकी सम्पत्ति पर कब्जा कर सकतेहैं और आप पर कलंक लग सकता है। यदि आप नशीले पदार्थों का सेवन करेंगे तो आपको अशुभ परिणाग प्राप्त होंगे। आपकी पत्नी आपके कारण दुःखी हो सकती हैं या आपकोअपनी पत्नी का बहुत सुख नहीं गिल सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– हरा रंग आपके लिये हानिकारक है।
2– काले रंग के कपड़े न पहनें।

उपाय :

1– कुयें गें दूध डालें।
2– अपने भोजन का कुछ भाग गछली, भैंसा और गाय को दें।

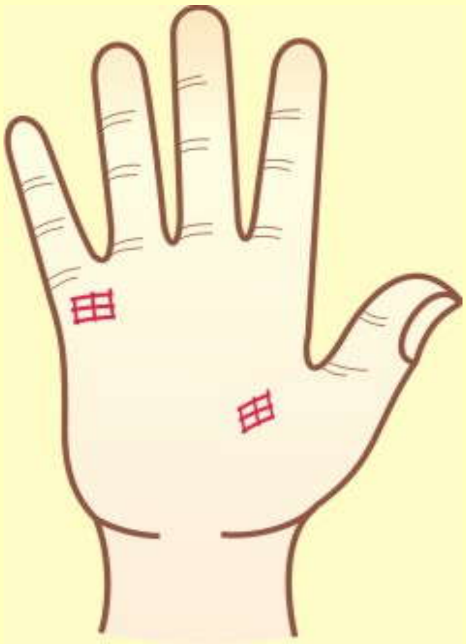

आपकी लाल किताब कुण्डली गें राहु रातवें भाव गें रिथत है। यदि आप 21 राल के पहले या29वें राल की आयु के बाद विवाह करेंगे तो आपको अशुभ परिणाग प्राप्त हो राकते हैं। आपके राजनीतिज्ञों रो रांबंध हो राकते हैं। यदि आप रारकारी नौकरी करते हैं तो आपको पुररकार या पदोन्नति प्राप्त होगी। आप पुलिरा या जेल विभाग गें नौकरी करके या बिजली रोरांबंधित व्यवराय करके अपनी जीविका अर्जित करेंगे। आपको पुत्री का राुख विवाह के तुरन्तबाद प्राप्त होगा, लेकिन पुत्र प्राप्ति गें विलम्ब हो राकता है। आप विदेश यात्रा पर जा राकते हैं। आप अपने जन्ग रथान रो दूर रह कर खुश रह राकते हैं। यदि आप अपने धन पर नियंत्रण नहीं रखेंगे तो आपके रांबंधी आपके धन को बर्बाद कर राकते हैं या उरो हड़प राकते हैं। आप शेयर या लॉटरी के कारण दिवालिया हो राकते हैं।

यदि आप अपने नवासे के साथ रहेंगे, कुत्ता पालेंगे, गलत काम करेंगे, अपनी पत्नी के साथ झगड़ा करेंगे तो आपका राहु कगजोर हो राकता है। यदि आपका राहु किरी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपके संबंधी आपका धन हड़प सकते हैं। आपका भाई भी आपके धनका दुरूपयोग कर राकता है। आपको रााइेदारी के व्यवराय, बिजली के राागान के व्यापार में हानि हो सकती है। यदि आप पुलिस या जेल विभाग में धोखाधड़ी करेंगे तो आप दीर्घायु नहीं हो राकते हैं। आपका शंकालु रवभाव आपकी पत्नी के राथ आपके रांबंध कटु बना सकताहै। आपको अपनी पत्नी से अलग होना पड़ सकता है या आपको उसके साथ किसी कानूनी विवाद गें उलझना पड़ राकता है। आप बदनाग भी हो राकते हैं। आपका जीवन रांघर्ष से भरा हो सकता है। आपके परिवार की रिथति बहुत अच्छी नहीं हो सकती है। आपको धन और पत्नी का राुख प्राप्त नहीं हो राकता है। आपकी पत्नी का गर्भपात हो राकता है। वह रिारदर्द रो ग्ररत हो राकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– कुत्ता न पालें।
2– पुलिस, जेल या बिजली विभाग में नौकरी न करें।

उपाय :

1– घर में चांदी की दो ईटें लगायें।
2– नारियल दान करें।
3– चांदी के बक्से में गंगाजल भर कर उसमें चांदी का वर्गाकार टुकड़ा रखें।

आपकी लाल किताब कुण्डली में केतु पहले भाव में स्थित है। आप धनी, मेहनती और खुशहाल होंगे। आप प्रगति अधिक करेंगे और परिवर्तन कम होंगे। आप अपने पिता के लिये वरदान साबित होंगे। आप अपने पिता की सेवा करेंगे। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं तो आपको उच्च पद प्राप्त होगा। आपका जन्म अस्पताल या ननिहाल में हुआ होगा। आपको मजबूती प्राप्त होगी। आपका भाग्य उदित होगा। आप अपने गुरू और पिता की सेवा करेंगे। आप बहुत सारे धन का विनिमय करेंगे, लेकिन आप धन संग्रह करने में सक्षम नहीं हो सकते

हैं। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है।

यदि आप अपने पिता से दूर रहेंगे, अपने संबंधियों को बर्बाद करने का प्रयास करेंगे, अपना घरबेचेंगे तो आपका केतु कमजोर हो सकता है। यदि आपका केतु किसी कारणवश कमजोर होजाता है तो आपके वे संबंधी जो आपके जन्मस्थान पर रहते होंगे, वे बर्बाद हो जायेंगे। आपपर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है। आपके पुत्र को कोई परेशानी हो सकती है। आपके परिवार पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। आपको गुप्तांगों या पेट से संबंधित कोई रोग हो सकताहै। आपको अपनी किसी लम्बी या विदेश यात्रा के बीच से ही वापस लौटना पड़ सकताहै। आप पुत्र के जन्म के लिये चिन्तित हो सकते हैं। आपके पौत्र के जन्म के बाद आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– बकरी न तो पालें और न ही उसकी सेवा करें।
2– बन्द गली के अन्त में स्थित घर में न रहें।

उपाय :

1– अपने पास लाल रूमाल रखें।
2– काले–सफेद कुत्ते की सेवा करें।

Sample

लाल–किताब वर्षफल

(16:01:2014 - 16:01:2015)

Computer Zone

Contact -

लाल किताब वर्षफल

वर्षफल कुण्डली –39

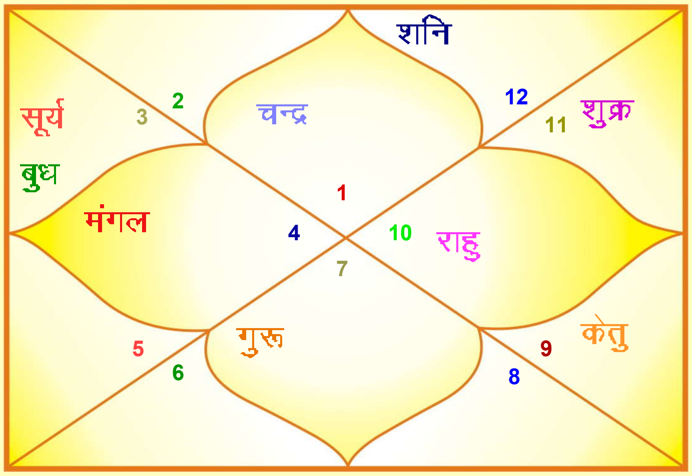

16:01:2014 -- 15:01:2015

लग्न कुण्डली (टेवा)

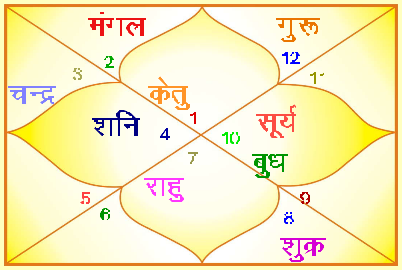

लाल किताब चंद्र कुण्डली

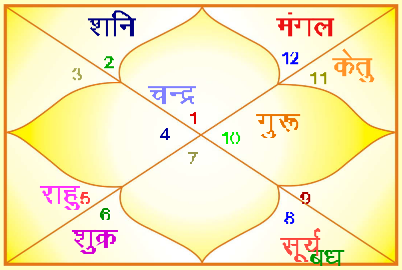

लाल किताब से वर्षफल में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	प्रभाव	पक्का घर	भाग्योदय का ग्रह	साथी ग्रह	कायम ग्रह	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य (बद)	तृतीय	राशि				हाँ			शुभ भाव में
चन्द्र	लग्न	राशि				हाँ			शुभ भाव में
मंगल (बद)	चतुर्थ	दृष्टि							अशुभ भाव में
बुध (बद)	तृतीय	ग्रह		हाँ					अशुभ भाव में
गुरू	सप्तम	राशि						हाँ	अशुभ भाव में
शुक्र (बद)	एकादश	राशि						हाँ	
शनि (बद)	द्वादश	दृष्टि				हाँ		हाँ	शुभ भाव में
राहु	दशम	ग्रह						हाँ	अशुभ भाव में
केतु (बद)	नवम	ग्रह				हाँ		हाँ	शुभ भाव में

लाल किताब से वर्षफल में भावों (खानों) की स्थिति

खाना न॰	खाना न॰	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने
१	चन्द्रमा	मंगल	सूर्य		सूर्य	शनि	मंगल
२		शुक्र	बृहस्पति	हाँ	चन्द्रमा		चन्द्रमा
३	सूर्य, बुध	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
४	मंगल	चन्द्रमा	चन्द्रमा		बृहस्पति	मंगल	चन्द्रमा
५		सूर्य	बृहस्पति	हाँ			सूर्य
६		बुध	बुध केतु	हाँ	बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७	बृहस्पति	शुक्र	शुक्र बुध		शनि		शुक्र
८		मंगल	मंगल शनि	हाँ		चन्द्रमा	चन्द्रमा
९	केतु	बृहस्पति	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
१०	राहु	शनि	शनि		मंगल	बृहस्पति	शनि
११	शुक्र	शनि	शनि				बृहस्पति
१२	शनि	बृहस्पति	बृहस्पति		शुक्र केतु	बुध राहु	राहु

लाल किताब से वर्षफल

वर्ष पूर्ण – 39

(16:01:2014 - 15:01:2015)

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य ग्रह के अशुभता के कारण –

आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य तीसरे भाव में स्थित है और दसवें भाव में कोई ग्रह स्थित है।

आपकी कुण्डली में सूर्य शत्रु ग्रह से युक्त या दृष्ट होकर तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आप पर गलत इल्ज़ाम लग सकता है, जिसकी वजह से आप कानूनी विवाद में फंस सकते हैं। नौकरी/कारोबार में प्रतिकूल परिस्थितियां उत्पन्न होने के कारण आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।दिन में ही आपके धन की चोरी हो सकती है। किसी निकट संबंधी से झगड़ा या विवाद हो सकता है। आपको पराई स्त्रियों से संबंध नहीं रखना चाहिए, अन्यथा बदनामी हो सकती है।

वर्षफल में सूर्य का उपाय

सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) ५0 ग्राम जौ लाल कपड़े में बांधकर अपने घर के किसी अंधेरी कोठरी में रखें।
(२) अपना चाल चलन ठीक रखें।
(३) सबका भला सोचें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चन्द्रमा ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चंद्रमा शुभ स्थिति में पहले भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको कपड़े और कागज से संबंधित व्यवसाय से ज़्यादा लाभ होगा। आपके शत्रुओं की स्थिति कमजोर होगी। स्त्रियों से आपको विशेष रूप से लाभ प्राप्त होगा। आपमें भावुकता और संवेदनशीलता जरूरत से ज़्यादा बढ़ सकती है। आप दूसरों की मदद करेंगे।

वर्षफल में चन्द्रमा का उपाय

चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) दूध और दूध से बनी वस्तुओं का व्यापार न करें।
(२) अपनी माता की सेवा करें।
(३) चांदी के बर्तन का उपयोग करें।
(४) नदी पार करते समय उसमें पैसा बहाएं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल ग्रह के अशुभता के कारण –

आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल चौथे भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव में कोई ग्रह स्थित है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने क्रोध पर काबू रखने की आवश्यकता है। भाई बन्धुओं से आपका मनमुटाव हो सकता है। आपको जीभ से संबंधित बीमारियांहो सकती हैं। आपको इस वर्ष वाहन चलाते समय काफी सावधान और सचेत रहने की भी आवश्यकता है। इस वर्ष आपके परिवार के किसी स्त्री सदस्य का कोई बड़ा ऑपरेशन हो सकता है। आपको अपना चाल-चलन ठीक रखना चाहिए।

वर्षफल में मंगल का उपाय

मंगल के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपायकरना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) आपको चीनी या शहद से संबंधित कारोबार से बचना चाहिए।
(२) अपने पास चांदी का एक चौकोर टुकड़ा रखें।
(३) चीनी के खाली बोरे अपनी छत पर रखें।
(४) दक्षिणमुखी मकान में न रहें।
(५) सुबह उठते ही अपना दांत साफ पानी से धोयें।
(६) अपनी माता का सेवा करें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध ग्रह के अशुभता के कारण –

आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध तीसरे भाव में स्थित है और दसवें भाव में कोई अन्य ग्रह स्थित है।

आपकी कुण्डली में बुध शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आप ज्वर आदि से पीड़ित हो सकते हैं। आपको जुआ, सट्टा, लाटरी इत्यादि से इस वर्ष बचकर रहना चाहिए। इस वर्ष यात्रायें भी आपको अधिक फायदा नहीं पहुंचायेंगी। इस वर्ष आपको पारिवारिक कलह का सामना करना पड़ सकता है। आपकी बहन, बुआ, बेटी पर भी बुध का अशुभ

असर हो सकता है। आपको जीभ से संबंधित रोग हो सकते हैं। यदि आप अपनी बहन, बुआ, या बेटी से धन लेकर कोई व्यापार शुरू करते हैं तो उसमें आपको घाटा हो सकता है।

वर्षफल में बुध का उपाय

बुध के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) रात को हरी मूंग भिगोकर सुबह में उसे पक्षियों को खिलायें।
(२) फिटकरी से दांत साफ करें।
(३) दुर्गा पूजन करायें।
(४) ६ वर्ष से कम उम्र की कन्याओं को भोजन करायें, एवं उनका आशिर्वाद लें।
(५) दमा की दवाईयां मरीजों में मुफ्त बाटें।
(६) विधवा औरतों से संबंध न रखें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शुभ स्थिति में सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके जीवन में कई सारे शुभ बदलाव दृष्टिगोचर होंगे। यदि आपका विवाह नहीं हुआहै, तो विवाह का प्रबल योग है। यदि आपका विवाह हो चुका है, तो आपके ससुराल से धन प्राप्ति हो सकती है। यदि आप साझेदारी में व्यापार कर रहे हैं, तो आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा। आपको ज्योतिष जैसे विषयों में विशेष रूचि हो सकती है। धार्मिक क्रिया कलापों में आप सक्रिय होंगे।

वर्षफल में बृहस्पति का उपाय

बृहस्पति के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपने घर के मंदिर में मूर्तियों की पूजा बिल्कुल न करें। चित्रों की पूजा कर सकते

हैं।

(२) साधु-संतों की संगत न करें।
(३) अपना चाल चलन ठीक रखें।
(४) पीले कपड़े में सोना बांधकर अपने से कुछ कुछ सामान लेकर अपने पास रखें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र ग्रह के अशुभता के कारण -

आपकी वर्षफल कुण्डली में, शुक्र ग्यारहवें भाव में स्थित है और बुध तीसरे भाव में उपस्थित है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर ग्याहरवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपके पिता और जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। आपको इस वर्ष कोई भी फैसला बहुत सोच-समझ कर करना चाहिए, अन्यथा आपको बाद में पछताना पड़ सकता है। इस वर्ष आपको स्त्रियों से विवाद या लड़ाई-झगड़ा नहीं करना चाहिए, अन्यथा आपको पछताना पड़ सकता है। इस वर्ष आपका स्वभाव थोड़ा रोमांटिक होगा।

वर्षफल में शुक्र का उपाय

शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) सरसो के तेल का दान करें।
(२) इस वर्ष अपनी मां या पत्नी को घर की आर्थिक स्थिति संभालने का दायित्व न दें।
(३) अपनी नौकरी/व्यवसाय जल्दी-जल्दी न बदलें।
(४) यदि आपका इस वर्ष विवाह हो रहा है, तो सफेद गाय का दान करें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि ग्रह के अशुभता के कारण –

आपकी वर्षफल कुण्डली में, शनि बारहवें भाव में स्थित है और सातवें भाव में कोई अन्य ग्रह स्थित है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको अनुमान के आधार पर कहीं भी पैसे का निवेश नहीं करना चाहिए। यदि आपके घर के कोने में कोई अंधेरी कोठरी है, तो उसमें प्रकाश की व्यवस्था बिल्कुल न रखें और मादक पदार्थों के सेवन से प्राय: बचें।

वर्षफल में शनि का उपाय

शनि के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) शराब और मछली का सेवन न करें।
(२) अपना चाल-चलन ठीक रखें।
(३) तांबे के बर्त्तन का उपयोग करें।
(४) काले कीड़ो को तिलचौरी डालें।
(५) लकड़ी की चारपाई पर न सोयें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शुभ स्थिति में होकर दसवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। राजनैतिक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं तो आपकी पदोन्नति हो सकती है।

वर्षफल में राहु का उपाय

राहु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपने सिर को ढ़क कर रखें।
(२) अपने अधिकारियों से मधुर संबंध रखें।
(३) सफेद या शरबती रंग की टोपी या पगड़ी का इस्तेमाल करें।
(४) अंधों को मीठा भोजन करायें।
(५) ४ किलो गुड़ (खाण्ड) मंगलवार को जल में प्रवाहित करें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु ग्रह के अशुभता के कारण –

आपकी वर्षफल कुण्डली में, केतु नौवें भाव में स्थित है और चौथे भाव में कोई अन्य ग्रह स्थित है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष की हुई यात्रा ज़्यादा लाभदायक नहीं होगी। यदि आप अपना चाल-चलन ठीक नहीं रखेंगे तो संतान को कष्ट हो सकता है। आपका किसी दूरस्थ स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है और यदि पदोन्नति की संभावना बन रही है तो किसी कारणवश उसमें बाधा आ सकती है। जायदाद के मामले में भी आपकी चिन्ता बनी रहेगी।

वर्षफल में केतु का उपाय

केतु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) कानों में सोना पहनें।
(२) सोने की ईट (२१ ग्राम) अपने घर में रखें।
(३) गलत लोगों की संगत में न रहें।
(४) कुत्तों को न सतायें।